Volume - 6 | Issue - 9 | October – 2016

Indian Streams Research Journal

कमलेश्वर की नारी केन्द्रित कहानियाँ

पूनम त्यागी

बी०ए०, एम्०ए०, एम्०फिल०, बी०ए० एवं पी०एच०डी०(शोधरत्),

विश्वभारती विश्वविद्यालय, बोलपुर, बीरभूम.

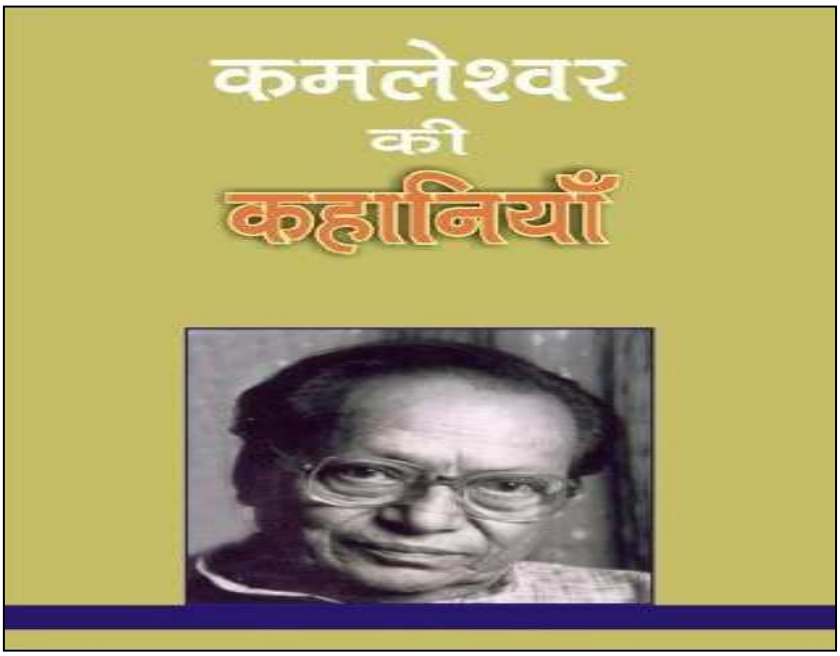

प्रस्तावना:-

नयी कहानी के प्रणेता कमलेश्वर का जीवन नारी से खासा प्रभावित रहा है नारी के विविध रूप उनके जीवन रुपी मार्ग में सदैव उनके साथ रहे, चाहे वह माँ हो या पत्नी अथवा उनकी पुत्री बचपन से वह स्त्री के रूप में अपनी माँ से अत्यधिक प्रभावित और करीब रहे, शायद यही कारण है कि उनकी रचनाओं में इसका प्रभाव स्पष्टतः लक्षित किया जा सकता है उनकी अधिकांश कहानियों में नारी के विविध रूपों सहित नारी जीवन सम्बन्धी विविध पहलुओं, समस्याओं, स्थितियों आदि को बड़े ही सहज ढंग से पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किया है प्रत्येक कहानी कुछ अलग सी भावना लिए हर बार कुछ अलग सा अहसास कराती है हर बार पाठक के सम्मुख एक अलग रूप भिन्न समस्याओं के साथ, उनसे जूँझता हुआ आ खड़ा होता है और जाते –जाते उसे कुछ विचलित सा कर जाता है, जिससे वह सोचने पर विवश हो जाता है और यही नहीं, उनकी कहानियाँ किसी एक मुद्दे को नही अपितु कई प्रश्नों को एक साथ पूछती नज़र आती है सोचने पर विवश करती और समाज की विभिन्न परतों को खोलकर यथार्थ को जस का तस उसी समाज के सामने प्रस्तुत करने का साहस करती हैं कमलेश्वर की कहानियाँ I

अब बात आती है उनकी कहानियों के नारी पात्रों की, तो उनकी नारी भारतीय है पर समय आने पर संघर्ष के लिए भी तैयार है अपनी अस्मिता, स्वाभिमान, इज्ज़त, गौरव की रक्षा उसके लिए सर्वोपरि है वहीं समाज, परिवार, देश भी उसके अस्तित्व का अभिन्न अंग है उनकी नारी किसी देशकाल या सीमा में नही बंधी हुई है उन्होंने देसी और विदेशी नारी दोनों के जीवन पर प्रकाश डाला है यहाँ उनकी विभिन्न कहानियों के कुछ पात्रों को लेखनीबद्ध करने का प्रयत्न किया गया है

'राजा निरबंसिया' में दो भिन्न युगों की नारी के जीवन को सामानांतर कथा शैली द्वारा दर्शाया गया है यहाँ स्थिति, मज़बूरी, समस्या लगभग एक सी है किन्तु उसका फल, उसकी प्रतिक्रिया, उसका अंजाम कुछ और है प्राचीन युग में नारी की गरिमा, उसका सम्मान, पतिव्रता होना ही उसके जीवन का श्रेष्ठ होता था, यही आधुनिक युग की नारी अपना कर्तव्य समझती है इन दोनों कहानियों में राजा और जगपति निसंतान रहते है परन्तु कुछ समय पश्चात् उन्हें संतान सुख प्राप्त हो जाता है प्राचीन काल में रानी राजा से अगाध प्रेम करती है और अपने सतीत्व की परीक्षा भी देती है किन्तु चंदा अपने पति की प्राणरक्षा के लिए अपनी इज्ज़त का सौदा करती है जो की निसंदेह उसके पति परायण होने का प्रमाण है जगपति इस बात से परिचित होने के पश्चात चन्दा का पुनः सौदा करता है अपनी बेरोज़गारी मिटाने के लिए

इन दोनों स्थितियों में फर्क इतना है कि पहले उसकी मज़बूरी थी और बाद में उसे मजबूर किया जाता है, पहले वह अपने पति के लिए यह करती है बाद में पति यह करवाता है, जगपती का स्वार्थी रूप देखने को मिलता है कि - "आड़े वक्त काम आने वाला आदमी है लेकिन उससे फायदा उठा सकना जितना आसान है.... उतना....मेरा मतलब है कि....जिससे कुछ लिया जाएगा, उसे दिया भी तो जाएगा।"[1] स्त्री द्वारा किये गये त्याग को समाज उसकी इच्छा बता देता है यहाँ नारी की असहाय स्थिति और उसके मानसिक उत्पी□न को प्रत्यक्ष अवलोकित किया जा सकता है वहीं यौन उत्पी□न पर परोक्ष रूप से इसके पश्चात बचनसिंह से बेटा होने पर कहीं न कही जगपति की नपुंसकता की ओर उंगली उठती है तो चंदा को घर छोड़कर 'किसी और के घर' बैठना पड़ता है, से पुरुषप्रधान समाज और नारी के समाज में अकेले रहने के अधिकार पर प्रश्नचिन्ह अंकित हो जाता है इतना सब होने पर भी वह जगपति से न तो कुछ कहती है और न ही आवाज़ उठती है, यहाँ उसके सहनशीलता के गुण को प्रतिपादित किया गया है प्राचीन और आधुनिक युग की कहानियों में सामंजस्य दिखाने के लिए एक आदर्शवादी अंत होता है जिसमें राजा –रानी खुशीपूर्वक रहने लगते है तो वहीं जगपति चंदा को अपना लेता है, पश्चाताप करता है परन्तु अपने प्राण त्याग देता है यहाँ चंदा का शेष जीवन संघर्ष की भेंट चढ़ जाता है चन्दा का दोष सिर्फ इतना होता है कि वह एक पतिपरायण स्त्री और उसका भला चाहनेवाली पत्नी है

'तलाश' कहानी में नारी के दो रूपों और विधवा जीवन को मुख्य रूप से दर्शाया गया है यह दो रूप है माँ और बेटी, ममी और सुमी का माँ प्रौढ़ विधवा है और बेटी युवा ममी विधवा स्त्री होने के साथ साथ माँ भी है और यही शुरू होता है मानसिक द्वंद्व एक ओर वह अपने मातृत्व की लाज रखना चाहती है,अपने माँ -बेटी के रिश्ते का लिहाज करती है तो दूसरी ओर उसके भीतर बैठी नारी और कामोत्तेजना उसे अनैतिक विचरण करने को बाध्य करते है ऐसे में वह छुप कर अपनी क्षुधापूर्ति करती है किन्तु यौवन के द्वार पर खड़ी उसकी बेटी सुमी माँ के परिवर्तन के रहस्य से परिचित हो जाती है और उसकी मानसिकता को समझ स्वयं को उसके रास्ते में नही आने देती यहाँ माँ – बेटी के अटूट सम्बन्ध के साथ नारी की समझदारी, मज़बूत मानसिक स्थिति के साथ सामाजिक और नैतिक दायरों को भी चित्रित किया गया है ममी आजाद, आधुनिक, निराश्रित स्त्री है, स्वयं पर आठ वर्षों तक सयंम रखती है किन्तु शारीरिक क्षुधा उसे अधिक देर तक ये नही करने देती- "समाज में नैतिकता के नवविकसित प्रतिमानों के आईने में ममी के चरित्र का अतः संघर्ष अभिव्यंजित हुआ है। ममी केवल माँ ही नहीं है, एक सामान्य नारी भी है, यहाँ उसके सहज नारीत्व को पूरी तटस्थता से एक बिल्कुल अलग हाशिए पर रखा कर देखा गया है"[2] कहानीकार ने आदर्श की तलाश में मातृत्व की रक्षा के लिए नारीत्व की बलि नहीं दी है। यहाँ नारी का उत्श्रंखल रूप चित्रित हुआ है विधवा होने के कारण उसे कई बन्धनों और नैतिक नियमों का पालन करना पड़ता है किन्तु वह इसके विपरीत सामान्य जीवन जीती है यहाँ समाज का परोक्ष चित्रण है ममी स्वयं समाज को एक बंधन के रूप में मानती है सुमी आधुनिक पीढ़ी की सुलझी हुई युवती के रूप में चित्रित हुई है जो दूसरो की भावनाओं और स्थितियों को भलीभांति समझती है, वह अपनी माँ को खुश करने की भरपूर कोशिश करती है दूसरों की ख़ुशी, निराश्रित, दृढ मानसिकता और समाज से न □रने की प्रवृत्ति इस कहानी के नारी पात्रों में स्पष्टतय लक्षित की जा सकती है

'मांस का दरिया' कहानी कमलेश्वर की अत्यंत मार्मिक, मुखर और अंतर्मन को झंझोड़ देने वाली कहानी है कहानी है एक जुगनू नामक वेश्या की, जो उम्र के ढलान पर है अधिकांशतः कहानियाँ वेश्या के यौवन काल पर लिखी जाती है पर कमलेश्वर ने यौवन से परिपूर्ण नहीं अपितु अधेड़ वेश्या के पात्र का चयन किया क्यूंकि वे अपनी कहानी में मनोरंजन की अपेक्षा यथार्थ प्रस्तुत करने के इच्छुक अधिक हैं यहाँ उन्होंने वेश्याओं के अतीत, उनकी इस दलदल में आने के कारण की अपेक्षा भोगे जा रहे वर्तमान और आने वाले वीभत्स भविष्य की ओर संकेत किया है जुगनू जीवन के ऐसे पढ़ाव पर है जहाँ उसके मांस को नोचकर लोग खा चुके है और अब उसके सम्मुख उसका बचा हुआ जीवन है इस समाज में ऐसे नैतिकतावादी लोग भरे पड़े हैं, जो ताजे मांस को तो बड़े मज़े से खाते है किन्तु जब वह मांस बासी हो जाता है तो नाक- भौं सिकोड़ने और घृणा करने लगते है, जुगनू की भी कुछ ऐसी ही हालत है जुगनू नारी न हो कर एक मांस का लोथड़ा बन कर रह गयी है जहाँ समाज उससे नोंचता रहता है उसकी पीड़ा,उसका दर्द किसी को नहीं दीखता - "अरी, अम्मा रे....मार □ाला....! वह पूरी आवाज से चीखी थी जैसे किसी ने कत्ल कर दिया हो, और छटपटाकर बेहोश सी हो गयी थी।[3] सरकार हो या समाज के ठेकेदार किसी का भी ध्यान इस वर्ग की ओर नहीं जाता है जो समाज इस व्यवसाय को जन्म देता है,जिसकी भूख को शांत करने के लिए इस निर्माण किया जाता है, वही इससे मुह मोड़ लेता है सिर्फ औरत के बल पर वेश्यावृत्ति का व्यवसाय नही चलता अपितु आदमी की सहभागिता उसमे अनिवार्य है फिर क्यों अकेले नारी को ही सरे लांछन, कष्ट, अवसाद, दुःख-दर्द झेलना पड़ता है उसे शारीरिक और मानसिक रूप से

पंगु कर दिया जाता है, क्यों उनकी सेवानिवृत्ति की कोई व्यवस्था नहीं है, समाज और सरकार ने इस दिशा में कोई कानून क्यों नहीं बनाया कि यौवन की समाप्ति के पश्चात् उन्हें कोई आर्थिक सुरक्षा प्राप्त हो इन्हें सेवानिवृत्ति के पश्चात् बीमारियाँ, घृणा, पीड़ा, बेबसी के साथ समाज से बहिष्कृत कर अमानवीय, घृणित, भयावह त्रासद जीवन जीने को विवश किया जाता है समाज की गन्दगी और पुरूषों की कामंधता को यदि ये साफ़ न करें तो उसी समाज के लिए कई मुश्किलें पैदा हो जाएँगी प्राचीन काल में इन्हें गौरव माना जाता था, नगरवधू का सम्मान दिया जाता था और आधुनिक समय में ज्ञान –विज्ञान में विकास करने के बाद हम इन्हें वितृष्णा की दृष्टी से देखते हैं इस कहानी में नारी के कोमल पक्ष, उसके कोमल हृदय, उसकी छटपटाहट, मज़बूरी तथा मार्मिक जीवन को प्रत्यक्ष रूप से अवलोकित जा सकता है तथा वेश्या के रूप में उनके वर्तमान और भविष्य का विद्रूप, विसंगत, मार्मिक, करूणास्पद यथार्थ कल्पना से परे है

'बयान' कहानी तो प्रत्यक्ष रूप से एक ईमानदार फोटोग्राफर की आत्महत्या और भ्रष्टाचार की है किन्तु इसमें नारी के आत्मसम्मान, स्वाभिमान, इज्ज़त और नारीत्व की हत्या परोक्ष रूप से प्रस्तुत की गयी है इसमें फोटोग्राफर की पत्नी कौसकी आत्महत्या का ज़िम्मेदार ठहराया है उसके पति ने व्यवस्था से तंग आकर आत्महत्या की परन्तु इसका दोषी उसकी पत्नी को बनाया जाता है-"वे अधनंगी तस्वीरे स्कूल के मैनेजर तक भी पहुँची थीं। उन्होंने फौरन तय किया था कि इस तरह की औरत का स्कूल में रहना एक पल के लिए भी मुमकिन नहीं है।[4] उसके चरित्र पर लांछन लगाये जाते हैं, उससे चरित्रहीन साबित किया जाता है, परपुरुष के साथ उसके सम्बन्ध जोड़े जाते हैं यह एक वि□म्बना ही है कि एक नारी को ही समस्या का मूल समझा जाता है या उसे ही कमज़ोर पक्ष मानकर सारा दोष उसके मत्थे मढ़ दिया जाता है कमलेश्वर ने बड़े ही सरल ढंग से फोटोग्राफर की पत्नी के बयान के रूप में कहानी को प्रस्तुत किया है एवं नारी के लाचार तथा व्यवस्था और समाज की दृष्टि से नारी को अवलोकित किया है

'जन्म' कहानी में कमलेश्वर ने कन्या जन्म और बेटे की चाह जैसे कुकृत्यों के साथ माँ की अकथनीय स्तिथि का बड़ा ही मार्मिक अंकन किया है इस कहानी में चंदूमुशी के यहाँ लड़के की चाह में लड़की पैदा होती है और पूरा परिवार इस दुःख में □ब जाता है किन्तु पैदा होने वाली बच्ची और उसकी माँ का पर किसी का ध्यान नही जाता क्या औरत का माँ बनना अभिशाप है अगर लड़की हुई और यदि लड़का हुआ तो यही वरदान कहलाता है समाज पक्षपात कर सकता है पर माँ नहीं उसके लिए तो उसकी सारी संतान एक समान हैं दादी इन कटु शब्दों का वार करती हैं – अब यह सब अच्छा नही लगता। रोज़ – रोज़ पेट पक□ पड़ी रहती है। घर में बच्चे समझदार हो गए हैं, पर इन्हें शर्म नहीं आती ![5] किस स्त्री को लज्जा नहीं आती किन्तु लड़के की चाह और वंश को आगे बढाने की इच्छा में यही परिवार उससे लज्जाहीन बनने पर विवश करता है लड़का हुआ तो माँ को सातवें आस्मां पर बैठा दिया जाता है और लड़की होने पर उसकी पैरों तले की ज़मीन भी खींच ली जाती है

'इतने अच्छे दिन' कहानी कमलेश्वर की बहुविख्यात कहानी है। 'समान्तर सोच' के तहत लिखी इस कहानी का वैचारिक पक्ष तीसरे दौर के अन्तर्गत आता है। इसमें भूख के यथार्थ को कलात्मक कौशल और मार्मिकता से प्रस्तुत किया गया है इसमें सूखाग्रस्त अकाल क्षेत्र का जनजीवन बहुत करीब से चित्रित हुआ है, कहानी कमली जीवन को बहुत निकट से देखती परखती है वह कैसी विकट परिस्थिति होगी जब मनुष्य अपने सर्वनाश की न सिर्फ कामना करता है बल्कि सर्वनाश हो जाने पर संतृप्त और तृप्ति का अनुभव करता है।

तीन साल से लगातार 'अकाल' को कहानी में इतने अच्छे दिन कहा गया है। इस अकाल में शहर से बीस मील दूर चीनी मिल का खुलना और साथ ही बस्ती के एक मील दूर हड्□ी गोदाम के खुलने से एका - एक बाला और कमली नामक भाई - बहन की किस्मत खुल जाती है। बाला अपने रिश्तेदारों की हड्□ियाँ बेच कर अपनी जीविका चला रहा है और उसकी छोटी बहन कमली तन का धंधा करके अपना पेट पालती है। दोनों भाई बहन इतने खुश है कि दोनों मिल कर इस अकाल के समय में पाँच - छह रूपए कमा लेते हैं। बाला अपने रिश्तेदारों की हड्□ियाँ बेचने और अपनी बहन के वेश्यावृत्ति करने पर सोचता है कि ये हमारे सबसे अच्छे दिन है। यहाँ आकर मानवता, मानव मूल्य, नैतिकता, सामाजिकता सब बेकार हो जाते हैं। यहाँ यथार्थ पूरी नग्नता के साथ दिखता है। भाई - बहन के साथ - साथ हर एक रिश्ते को बाला भूल जाता है। । "उसके बाएँ गाल की साँवली चमड़ी पर खून की एक सूखी बिंदी चिपकी हुई थी। वह उस पर ऊँगली फिराने लगी तो बाला ने पूछा - क्या हुआ? उस साले ने फिर काटा इतने जोर से"[6] यहाँ कमली के गाल पर उस सेठ ने नही अपितु पूरे समाज ने काटा है और वो खून की बिंदी उसके साथ हुए शोषण का सबूत है। कमली एक साधारण, वक़्त और हालात के सामने मजबूर हुई नारी का चित्र प्रस्तुत करती है। वह परिस्थितियों के साथ समझौता कर अपना जीवन अपने अनुसार यापन करती है।

'दूसरे' कहानी में भारतीय नारी की परमुखापेक्षित स्थिति का कारुणिक, मर्मस्पर्शी, दयनीय चित्रण है। यहाँ सुनीता नामक निम्न वर्ग की एक ऐसी लड़की का वर्णन है जिसकी उम्र शादी लायक हो गई है। किन्तु घर की आर्थिक स्थिति बदतर होने के कारण एक ओर तो वह नौकरी करने को विवश है, दूसरी ओर अपने सपनों का गला घोंट कर दूसरों की इच्छा से अपने जीवन का सबसे बड़ा विवाह रूपी कार्य करने को बाध्य है। यह कैसी बिडम्बना है कि भारत में नारी को एक ओर तो देवी व माँ समझकर पूजा जाता है वहीं दूसरी ओर उसे दबाया, कुचला जाता है। सुनीता अपने मामा द्वारा लाए गए रिश्ते को स्वीकार करने को बाध्य है और उसकी इस बाध्यता का कारण है उसकी आर्थिक स्थिति।

यहाँ एक ऐसी नारी चित्रित कि गई है जिसे समाज या बाहर वालों से नहीं बल्कि अपनों से संघर्ष करना है। उसके भीतर की बेचैनी, अकुलाहट, कुण्ठापन, उसका नारी सुलभ, सौन्दर्य, खुशियों का दमन कर देता है, उसके अपने ही उसके लिए दूसरे हो जाते हैं। कमलेश्वर ने अधिकांशत नारी के विवाहित रूप को चित्रित किया है, किन्तु यहाँ नारी के कुँवारे रूप को और उस समय को अभिव्यक्त किया है। इस कहानी के जरिये कमलेश्वर इस बात को भी चिन्हित करते हैं कि यह पुरुष प्रधान समाज है। यहाँ नारी का अस्तीव, व्यक्तित्व शून्य है।

कमलेश्वर की 'सफ़ेद तितलियाँ', 'सीखचें', 'आसक्ति', 'लाश', 'तुम कौन हो' इत्यादि कहानियों में कमलेश्वर ने नारी जीवन के विविध पक्षों को उकेरा है कमलेश्वर नारी के हर रंग, रूप, भाव, दशा और दिशा को दर्शाने एवं संप्रेषित करने में पूर्ण रूप से स□ल हुए हैं उस समय में उनकी दृष्टि ने भविष्य में झाँक लिया था इसलिए तो जब 'स्त्री विमर्श' की सुगबुगाहट भी न हुई थी कमलेश्वर नारी को अपनी कहानियों का केंद्र बिंदु बना समाज को उसकी अवस्था से परिचित करने का अभूतपूर्व प्रयास कर रहे थे, जिसे उनकी कहानियों में प्रत्यक्ष देखा जा सकता है

सन्दर्भ ग्रंथ-

1. कमलेश्वर, कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ० 19, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2009
2. सिंह, डॉ० पुष्पपाल, कहानीकार कमलेश्वर: पुनर्मूल्यांकन, पृ० 93, किताबघर प्रकाशन, 2012
3. कमलेश्वर, कमलेश्वर : समग्र कहानियाँ, पृ० 248, राजपाल एण्ड संस, 2007
4. कमलेश्वर, कमलेश्वर: समग्र कहानियाँ, पृ० 433, राजपाल एण्ड संस, 2007
5. कमलेश्वर, कमलेश्वर : समग्र कहानियाँ, पृ० 56, राजपाल एण्ड संस, 2007
6. कमलेश्वर, कमलेश्वर: समग्र कहानियाँ, पृ० 653, राजपाल एण्ड संस, 2007

पूनम त्यागी
बी०ए०, एम्०ए०, एम्०फि□ल०, बी०ए० एवं पी०एच०डी०(शोधरत्), विश्वभारती विश्वविद्यालय, बोलपुर, बीरभूम.